**स्यामाजी आंखडली मीचीने ऊभा, सखियो वनमां पसरी।**
**सहु कडछीने रमे जुजवा, भूखण लीधां ऊंचा धरी।। १३ ।।**

श्री श्यामाजी अपनी आंख बन्द करके खड़ी हुईं। सखियां वन में छिप गईं। सब सखियां अपने आभूषण ऊंचे करके तथा कपड़ों को कमर में समेट कर खेलती हैं।

**आनंद मांहें सहुए सखियो, पैए जाय उजाणी।**
**भूखण न दिए बाजवा, एणी चंचलाई जाय न बखाणी।। १४ ।।**

सब सखियां आनन्द में हैं और पाली (ठप्पा लगाने का निश्चित स्थान) की तरफ दौड़कर जा रही हैं। वह अपने आभूषणों की आवाज नहीं होने देतीं। उनकी ऐसी चतुराई की महिमा बखान से बाहिर है।

**उलास दीसे अंगों अँगे, श्रीस्यामाजी ने आज।**
**ठेक दई ठकुराणीजीए, जईने झाल्या श्री राज।। १५ ।।**

आज श्री श्यामाजी के अंग-अंग में उमंग दीख रही है। उन्होंने कूदकर झपट्टा मारा और वालाजी को पकड़ लिया।

**ए रामत घणूं रूडी थई, मारा वालाजीने संग।**
**कहे इंद्रावती निकुंज वन, घणूं रमतां सोहे रंग।। १६ ।।**

वालाजी के साथ निकुंज वन में हमने यह खेल बड़े आनन्द से खेला, ऐसा श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ४७० ।।

## राग अडोल गोरी–चरचरी

**सखी वृखभान नंदनी, कंठ कर कृष्ण नी।**
**जोड एक अंगनी, रमती रंगे रास री।। १ ।।**

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे सखियो! वृखभाननन्दिनी (श्री राधाजी) श्री कृष्णजी के गले में हाथ डालकर रास खेलती हैं। यह युगल स्वरूप जैसे एक ही अंग हो, ऐसा लगता है।

**स्याम स्यामाजी जोड सुचंगी, जुओ सकल सुंदरी।**
**सोभा मुखारविंदनी, करे मांहों मांहें हांस री।। २ ।।**

हे सखियो! देखो श्री श्याम-श्यामाजी की जोड़ी बहुत अच्छी है। दोनों के मुखारबिन्द की शोभा मनमोहक है और वे आपस में हंसते हैं।

**भूखण लटके भामनी, कांई तेज करए कामनी।**
**संग जोड स्यामनी, वनमां करे विलास री।। ३ ।।**

श्री श्यामाजी के आभूषण लटक रहे हैं। जिनके तेज की किरणों से मन में कामनाएं उठती हैं। ऐसी श्री श्यामाजी की जोड़ी श्याम के साथ वन में आनन्द कर रही है।

**पांउं भरे एक भांतसुं, रमती रंग खांतसुं।**
**जुओ सखी जोड कान्हसुं, कांई सुंदरी सकला परी।। ४ ।।**

वह एक पांव भी जब आगे चलते हैं तो उमंग और चाहना से चलते हैं। हे सखियो! तुम सब कन्हैया की जोड़ी को देखो। कैसी है जो श्री श्यामाजी के साथ सर्वश्रेष्ठ है।

Nijanand App

**फरती रमे फेरसुं, सुंदरबाई घेरसूं।**
**हजार वार तेरसूं, आवी वालाजी पास री।। ५ ।।**

सुन्दरबाई ऐसी युगल जोड़ी के चारों ओर घूमती है और बारह हजार सखियों को लेकर वालाजी के पास आती है।

**वल्लभे लीधी हाथसूं, सुंदरबाई बाथसूं।**
**रामत करे निघातसूं, जोरे मुकावे हाथ री।। ६ ।।**

वालाजी ने सुन्दरबाई को पकड़कर अपने गले से लगा लिया और जोर से दबाया। तब सुन्दरबाई अपनी ताकत से हाथ छुड़ाती हैं।

**बेहूगमां बे भामनी, वचे कान्ह कंठे कामनी।**
**कंठ बांहोंडी बंने स्यामनी, एम फरत प्राणनाथ री।। ७ ।।**

दोनों बगलों में दो अंगनाएं हैं और बीच में श्री कृष्णजी दोनों के गले में हाथ डाले हैं। इस प्रकार से श्री प्राणनाथजी दोनों के गले में बाहें डालकर घूम रहे हैं।

**आखल पाखल सुंदरी, केटलीक कंठे बांह धरी।**
**एक ठेकती फरती भमरी, एम रमत सकल साथ री।। ८ ।।**

आगे पीछे कई एक सखियां गले में हाथ डालकर इसी प्रकार कूदती और चक्कर लगाती हैं।

**झणके झण झांझरी, घूंघरी घमके मांझ री।**
**कडला बाजे मांहें कांबी री, विछुडा स्वर मिलाप री।। ९ ।।**

इस प्रकार की रामत खेलने में पांव के आभूषण—झांझरी, घुंघरी, कांबी, कड़ला और बिछुआ एक साथ एक स्वर से आवाज करते हैं।

**धमके पांउ धारुणी, रमती रास तारुणी।**
**फरती जोड फेरनी, न चढे कोणे स्वांस री।। १० ।।**

युवतियां रास करते समय धरती पर जोर से पैर मारती हैं और चक्कर लगाती हैं, फिर भी किसी की सांस नहीं फूलती।

**चंद चाल मंद थई, जोई सनंधे थकत रही।**
**गत मत भूली गई, देखी थयो उदास री।। ११ ।।**

ऐसी सुन्दर रामत को देखकर चन्द्रमा की चाल भी धीमी हो गई। चन्द्रमा अपनी चाल और सुधि भूलकर उदास हो गया (वह भी अपनी बदनसीबी पर अफसोस करने लगा, काश! मैं भी सखी होता)

**आनंद घणो इंद्रावती, बांहोंडी कंठ मिलावती।**
**लटकती चाले आवती, वालाजी जोडे जास री।। १२ ।।**

श्री इन्द्रावतीजी आनन्द में फूली नहीं समातीं। वह लटकती चाल से वालाजी के पास जाकर उनके गले में हाथ डालती हैं।

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ ४८२ ॥

Nijanand App